विद्या ददाति विनयम्

संजीव®

सरसा पाठशाला

RPSC-32

2010 से 2025 तक

हल प्रश्न पत्र

हिन्दी

व्याख्या सहित

सहायक आचार्य हिंदी

सेट एक्जाम हिंदी

वरिष्ठ अध्यापक हिंदी

स्कूल व्याख्याता हिंदी

राजस्थान लोक सेवा आयोग के 2010 से 2025 तक
हिंदी के 32 प्रश्न पत्रों का व्याख्यापरक श्रेष्ठ संकलन

लेखक

कैलाश नागौरी

(सरसा पाठशाला ऐप)

वॉट्सऐप- 9660669988

संपादक

डॉ. दीपेश कुमार सैनी

संजीव प्रकाशन, जयपुर

- **प्रकाशक :**
  संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,
  जयपुर-03
  website : www.sanjivprakashan.com

- © किरण (सरसा पब्लिकेशन)

- **द्वितीय संस्करण**-मई, 2025
- **मूल्य : ₹ 600.00**
- **लेजर कम्पोजिंग :**
  संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर
- **मुद्रक :** मनोहर आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं-
  Email : sanjeevcompetition@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग, संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक के किसी भी अंश का पुनरुत्पादन या किसी प्रणाली के सहारे पुनर्प्राप्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीक या तरीके-इलेक्ट्रोनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या वेब माध्यम से प्रकाशक की अनुमति के बिना प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है।
- हमने अपने प्रयास से इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित किसी भी सूचना की सत्यता या त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- सभी प्रकार के प्रतिवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पेपर	पृष्ठ संख्या
1.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'-2024 (संस्कृत शिक्षा)	05
2.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2022 (माध्यमिक शिक्षा)	17
3.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2022 (संस्कृत शिक्षा)	31
4.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2018 (माध्यमिक शिक्षा)	42
5.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2018 (संस्कृत शिक्षा)	53
6.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2018 (विशेष शिक्षा)	65
7.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2015 (विशेष शिक्षा)	75
8.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2016 (माध्यमिक शिक्षा)	85
9.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2014 (माध्यमिक शिक्षा)	96
10.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2013 (विशेष शिक्षा)	108
11.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2011 (माध्यमिक शिक्षा)	119
12.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2010 (माध्यमिक शिक्षा)	130
13.	द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'- 2010 (माध्यमिक शिक्षा)	141
14.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'-2024 (संस्कृत शिक्षा)	151
15.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'-2022 (माध्यमिक शिक्षा)	164
16.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'- 2022 (संस्कृत शिक्षा)	176
17.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'- 2018 (माध्यमिक शिक्षा)	187
18.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'- 2018 (संस्कृत शिक्षा)	203
19.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'-2015 (माध्यमिक शिक्षा)	218
20.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'-2013 (माध्यमिक शिक्षा)	230
21.	स्कूल व्याख्याता 'हिंदी'- 2011 (माध्यमिक शिक्षा)	241
22.	कॉलेज व्याख्याता 'हिंदी'-2024 प्रथम पेपर (संस्कृत शिक्षा)	249
23.	कॉलेज व्याख्याता 'हिंदी'-2024 द्वितीय पेपर (संस्कृत शिक्षा)	262
24.	कॉलेज व्याख्याता 'हिंदी'-2024 प्रथम पेपर (कॉलेज शिक्षा)	281
25.	कॉलेज व्याख्याता 'हिंदी'-2024 द्वितीय पेपर (कॉलेज शिक्षा)	295
26.	कॉलेज व्याख्याता 'हिंदी'-2020 (प्रथम पेपर)	313
27.	कॉलेज व्याख्याता 'हिंदी'-2020 (द्वितीय पेपर	326
28.	कॉलेज व्याख्याता 'हिंदी'-2014 (प्रथम पेपर)	348
29.	कॉलेज व्याख्याता 'हिंदी'-2014 (द्वितीय पेपर)	359
30.	सेट परीक्षा 'हिंदी'-2023 (परीक्षा तिथि- 26 मार्च 2023)	379
31.	सेट परीक्षा 'हिंदी'- 2013-14 (द्वितीय पेपर)	388
32.	सेट परीक्षा 'हिंदी'- 2013-14 (तृतीय पेपर)	396

''लेखक की कलम से''

संजीव प्रकाशन से प्रकाशित इस पुस्तक का प्रथम संस्करण खूब प्रशंसनीय रहा है। यह इस पुस्तक का द्वितीय पूर्णतया संशोधित एवं संवर्द्धित संस्करण हैं। राजस्थान लोक सेवा आयोग से हिंदी शिक्षक भर्ती परीक्षा के लिए अब तक जितने भी ज्ञात पेपर हुए हैं, उन सभी पेपर्स का एक जगह संकलन वाकई में खूब चर्चित है। किसी ने सच ही कहा है कि मुख्य परीक्षा में बैठने से पहले उस परीक्षा के पूर्व के पेपर्स का अवलोकन करने से मुख्य परीक्षा का पैमाना परखा जा सकता है कि परीक्षा का स्तर एवं प्रश्नों की शैली किस प्रकार की रहने वाली है। विद्यार्थियों के हित में इस नवीनतम संस्करण में राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित द्वितीय श्रेणी, प्रथम श्रेणी शिक्षक, सहायक आचार्य एवं सेट परीक्षा के लिए हिंदी विषय के सभी **32 प्रश्न पत्र** वर्ष 2010 से 2024 तक के शामिल किए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न पत्र के उत्तर RPSC की उत्तरमाला के आधार पर लगाए गए हैं। फिर भी RPSC द्वारा जारी उत्तरमाला से मिलान अवश्य कर लेवें, क्योंकि संशोधित परिणाम में उत्तरमाला भिन्न भी हो सकती है। अधिकांश प्रश्नों की सरल भाषा में व्याख्या की गई है। इस पुस्तक में द्वितीय श्रेणी अध्यापक भर्ती परीक्षा हिंदी के कुल **13 प्रश्न पत्र**, स्कूल व्याख्याता भर्ती परीक्षा हिंदी के कुल **8 प्रश्न पत्र**, सहायक आचार्य भर्ती परीक्षा हिंदी के कुल **8 प्रश्न पत्र** और सहायक आचार्य पात्रता परीक्षा (सेट) हिंदी के कुल **3 प्रश्न पत्र** सहित कुल **32 प्रश्न पत्र** शामिल किए गए हैं। पुस्तक लेखन एवं टाईपिंग के लिए पूर्णतया सावधानी बरती गई है, फिर भी मानवीय स्वभाववश कहीं त्रुटि होना स्वाभाविक हो सकता है, इसलिए किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए लेखक एवं प्रकाशक जिम्मेदार नहीं है। हमारा आपसे निवेदन है कि यदि पुस्तक में कहीं त्रुटि पायी जाती है तो इसे अनदेखा नहीं करें। आप हमें वाट्सऐप 9660669988 पर मैसेज करके चर्चा अवश्य करें। हमें आपके सुझाव अवश्य ही और बेहतर करने के लिए प्रेरित करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं पिछली बार की तरह इस बार भी आपके सुझावों से वंचित नहीं रहूँगा।

धन्यवाद!

✍ **कैलाश नागौरी**
(सरसा बुक)

नई बुक्स की जानकारी, अपडेट, बुक खरीदने व टेस्ट सीरीज के लिए सरसा बुक ऐप डाउनलोड करें। गूगल प्ले स्टोर पर जाएँ और सर्च करें- **Sarsa Book**

पेपर 1 द्वितीय श्रेणी अध्यापक 'हिंदी'-2024 (संस्कृत शिक्षा)

(परीक्षा तिथि- 28 दिसम्बर 2024)

1. निम्नलिखित में विलोम शब्द दर्शाने वाला सही विकल्प है -

(अ) पाश्चात्य - पौरस्त्य (ब) परिहार्य- परिष्कृत
(स) नैसर्गिक- प्राकृतिक (द) परिणीत - परिपक्व

व्याख्या-(अ) पाश्चात्य का विलोम शब्द पौरस्त्य या पौर्वात्य होता है। अत: यह सही विकल्प है। शेष विकल्पों में परिहार्य का अपरिहार्य, नैसर्गिक का कृत्रिम और परिणित का अपरिणित विलोम शब्द होगा।

2. योजक चिह्न का प्रयोग कब नहीं होता है?

(अ) नाटकों के संवाद में।
(ब) द्वंद्व समास में दो शब्दों को जोड़ने पर।
(स) तुलनावाचक- सा, सी, से के पहले।
(द) पुनरुक्त शब्दों के बीच में।

व्याख्या-(अ) नाटकों के संवाद में योजक चिह्न का प्रयोग नहीं होता है। योजक चिह्न (-) होता है।

3. निम्नलिखित में से कौनसा शब्द तत्सम नहीं है?

(अ) पंख (ब) स्वामी
(स) अक्षर (द) राजा

व्याख्या-(अ) पंख तद्भव शब्द है। पंख का तत्सम शब्द पक्ष है।

4. वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है?

(अ) सदृश्य (ब) अन्त्याक्षरी
(स) स्वास्थ (द) उपलक्ष

व्याख्या-(ब) अन्त्याक्षरी वर्तनी की दृष्टि से शुद्ध शब्द है। शेष शब्दों के शुद्ध रूप - सदृश, स्वास्थ्य, उपलक्ष्य।

5. विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग कहाँ पर नहीं किया जाता है?

(अ) आह्लादसूचक शब्दों के अंत में।
(ब) जहाँ स्थिति निश्चित न हो।
(स) बड़ों को सादर संबोधित करने में।
(द) छोटों के प्रति शुभकामनाएँ प्रकट करने पर।

व्याख्या-(ब) विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग हर्ष, शोक, घृणा आदि भाव प्रकट करने के लिए किया जाता है।

6. ''किसी की चिट्ठी डाकिया हमारे घर फेंक गया।'' रेखांकित शब्द (किसी) किस सर्वनाम को दर्शाता है?

(अ) अनिश्चयवाचक (ब) निजवाचक
(द) संबंधवाचक (स) निश्चयवाचक

व्याख्या-(अ) उक्त रेखांकित पद 'किसी' अनिश्चियवाचक सर्वनाम है। क्योंकि इसमें निश्चितता का बोध नहीं हो रहा है कि यह चिट्ठी किसकी है।

7. निम्नलिखित विकल्पों में से 'द्वित्व' व्यंजन का सही उदाहरण है -

(अ) अशक्त (ब) यत्न
(स) सच्चा (द) सत्कार

व्याख्या-(स) सच्चा शब्द में दित्व व्यंजन है। जब एक समान वर्ण एक साथ होते हैं और पहला वर्ण स्वररहित होता है, तब दित्व व्यंजन कहलाता था। संयुक्त व्यंजन में भी दो वर्ण एक साथ होते हैं, लेकिन एक समान नहीं होते हैं। संयुक्त व्यंजन में दो अलग-अलग व्यंजन जुड़ते हैं। वर्णमाला में चार संयुक्त व्यंजन है- क्ष, त्र, ज्ञ, श्र।

8. निम्नलिखित में से किस विकल्प के सभी शब्द परस्पर पर्यायवाची हैं?

(अ) अंबर - वसन (ब) वृक्ष - विहंग
(स) चक्षु- कृशानु (द) वायु- चपला

व्याख्या-(अ) अंबर और वसन दोनों आकाश के पर्यायवाची है।

9. उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजन-वर्णों का गलत विकल्प हैं-

(अ) ट्, ठ्, ड्- मुर्द्धन्य (ब) त्, थ्, द्- कोमल तालु
(स) च्, छ्, ज् - तालव्य (द) प्, फ्, ब्- ओष्ठ्य

व्याख्या-(ब) त्, थ्, द् का उच्चारण स्थान दंत है, अत: यह दंत्य व्यंजन हैं।

10. निम्नलिखित में से तत्सम शब्द है -

(अ) शाप (ब) बूँद
(स) खजूर (द) कपूर

व्याख्या-(अ) शाप तत्सम शब्द है। शाप का तद्भव शब्द श्राप है। बूंद का तत्सम बिंदु, कपूर का तत्सम कर्पूर और खजूर का तत्सम खर्जूर होता है।

11. निम्न में से अशुद्ध वाक्य है -

(अ) हम देश के लिए जान पर कुरबान हो जायेंगे।
(ब) मेरा सिर शर्म से झुक गया।
(स) चौथे दिन शत्रु ने हथियार डाल दिये।
(द) उन्होंने उसे आड़े हाथों लिया।

व्याख्या-(अ) हम देश के लिए जान पर कुरबान हो जायेंगे, अशुद्ध वाक्य है। इसमें 'जान पर' अनुपयुक्त शब्द है। सही वाक्य होगा- हम देश के लिए कुरबान हो जायेंगे।

12. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित में विधिवाचक वाक्य है -

(अ) संकटों ने उसे हर तरफ से घेरा, किंतु वह निराश नहीं हुआ।
(ब) अस्वस्थ रहने के कारण वह परीक्षा में सफल न हो सका।
(स) जो छात्र परिश्रम करेंगे, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी।
(द) मैं खाना खा चुका, तब वह आया।

व्याख्या-(द) मैं खाना खा चुका, तब वह आया, विधिवाचक वाक्य है। ऐसे वाक्य जिसमें किसी काम के होने या किसी के अस्तित्व का बोध हो, वह वाक्य विधिवाचक या विधानवाचक वाक्य कहलाते हैं। अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं-(1) संकेतवाचक वाक्य (2) विधिवाचक वाक्य (3) प्रश्नवाचक वाक्य (4) इच्छावाचक वाक्य (5) आज्ञावाचक वाक्य (6) सन्देहवाचक वाक्य (7) विस्मयादिबोधक वाक्य और (8) निषेधवाचक वाक्य।

13. उपयुक्त विलोम शब्द दर्शाने वाला विकल्प नहीं है -
(अ) धृष्ट - विनम्र (ब) दमनीय - कमनीय
(स) दुष्कर - सुकर (द) तामसिक - सात्विक

व्याख्या-(ब) दमनीय का विलोम कमनीय असंगत है। दमन का विलोम उद्धार होता है।

14. निम्नलिखित में से कौनसा कंठ्य वर्ण नहीं है?
(अ) झ् (ब) ह्
(स) अ (द) क्

व्याख्या-(अ) झ् तालव्य वर्ण है। शेष सभी वर्णों का उच्चारण स्थान कंठ है।

15. वाक्यांश हेतु दिए गए उपयुक्त शब्द वाला विकल्प है–
(अ) बढ़ा-चढ़ाकर कही गई उक्ति - कटूक्ति
(ब) जो स्त्री, कविता रचती है - विदुषी
(स) जो व्याकरण जानता है- वैयाकरण
(द) जो बहुत कठिनाई से मिलता है - अलभ्य

व्याख्या-(स) जो व्याकरण जानता है- वैयाकरण, उपयुक्त शब्द है। शेष वाक्यांशों के लिए एक शब्द-
(1) बढ़ा-चढ़ाकर कही गई उक्ति=अतिशयोक्ति
(2) जो स्त्री, कविता रचती है= कवयित्री
(3) जो बहुत कठिनाई से मिलता है= दुर्लभ

16. कर्मवाच्य का उदाहरण है -
(अ) राम चाय पीता है। (ब) राम पुस्तक पढ़ता है।
(स) पुस्तक पढ़ी जाती है। (द) मोनिका आम खाती है।

व्याख्या-(स) पुस्तक पढ़ी जाती है, कर्मवाच्य है। जब क्रिया के लिंग, वचन कर्त्ता के अनुसार न आकर कर्म के अनुसार आते हैं, अर्थात् कर्म ही प्रधान होता है। तब इसे कर्मवाच्य कहते हैं। इसमें कर्म ही प्रधान होने के कारण सदैव ही सकर्मक क्रिया होती है। जैसे- पंकज ने चाय पी। कर्तृवाच्य को कर्मवाच्य में बदलना- कर्तृवाच्य में कर्त्ता ही प्रधान होता है जबकि कर्मवाच्य में कर्म प्रधान होता है। अत: सबसे पहले कर्त्ता का स्थान गौण कर दिया जाता है। कर्त्ता को गौण करने की दो युक्तियाँ हैं- एक कर्त्ता के साथ करण कारक का विभक्ति चिह्न (से, के द्वारा) लगाकर दूसरी कर्त्ता का विलोप करके।
जैसे- राम पत्र लिखता है। (कर्तृवाच्य)
राम के द्वारा पत्र लिखा जाता है। (कर्मवाच्य)

17. 'ठीक-ठीक' शब्द क्रिया विशेषण के किस रूप को दर्शाता है?
(अ) रीतिवाचक (ब) कालवाचक
(स) परिमाणवाचक (द) स्थानवाचक

व्याख्या-(अ) ठीक-ठीक शब्द क्रिया विशेषण (अविकारी शब्द) के रीतिवाचक रूप को दर्शाता है। क्रिया विशेषण अव्यय के मुख्य रूप से चार भेद है-
(1) स्थानबोधक क्रिया विशेषण- ऐसे अव्यय, जो क्रिया का स्थान या दिशा बताते हैं। स्थानबोधक क्रिया विशेषण के भी दो भेद है-
(अ) स्थितिवाचक- ऊपर, नीचे, आगे, पीछे, यहाँ, वहाँ, बाहर, भीतर, आमने-सामने, सर्वत्र आदि।
(ब) दिशावाचक-इधर, उधर, उस तरफ, इस तरफ, किधर, जिधर, उस जगह, इस जगह आदि।
(2) कालबोधक क्रिया विशेषण- ऐसे अव्यय, जो क्रिया के काल का बोध कराते हैं, कालबोधक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। जैसे- आज, कल, परसों, कब, जब, तब, अब, बाद में, पहले, सुबह, शाम, दोपहर, रात आदि।
(3) परिमाणबोधक क्रिया विशेषण- ऐसे अव्यय, जो क्रिया की मात्रा का बोध कराते हैं तो परिमाणबोधक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- थोड़ा, कम, ज्यादा, बहुत, अधिक, बराबर, अति, बिलकुल, बढ़ाकर, घटाकर, खूब, भरपूर आदि।
(4) रीतिबोधक क्रिया विशेषण- ऐसे अव्यय, जो क्रिया की रीति या ढंग का बोध कराते हैं, रीतिबोधक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। उपर्युक्त ध्यानपूर्वक शब्द रीतिबोधक क्रिया विशेषण है।

18. अव्ययीभाव समास का उदाहरण नहीं है
(अ) यथासाध्य (ब) गृहागत
(स) प्रतिदिन (द) भरसक

व्याख्या-(ब) गृहागत में अव्ययीभाव समास नहीं है। गृहागत (गृह को आगत) तत्पुरुष समास है। अत: गृहागत में कर्म तत्पुरुष समास है। जिस शब्द का समास विग्रह करने पर को योजक चिह्न आता है, उसमें कर्म तत्पुरुष समास होता है।

19. कौनसा विकल्प सुमेलित नहीं है?
(अ) पाँचों उँगलियों घी में - सब तरफ से लाभ ही लाभ
(ब) पास नहीं धेला, भतार चले मेला - असंभव कार्य करना
(स) पसीने की कमाई - मेहनत से कमाया हुआ धन
(द) सब धान बाईस पँसेरी-सबके साथ होने वाला एक-सा व्यवहार

व्याख्या-(ब) पास नहीं धेला, भतार चले मेला लोकोक्ति का अर्थ होगा- बिना क्षमता के किसी कार्य को करने के लिए तैयार होना।

20. किस शब्द का रूप एकवचन और बहुवचन में एक जैसा रहता है?
(अ) बेटा (ब) भतीजा
(स) मामा (द) साला

व्याख्या-(स) मामा शब्द का रूप सदैव एक समान रहता है।

21. किस समूह में सभी शब्द तत्सम है?
(अ) वचन, प्रिय, मध्य (ब) चूल्हा, चौकी, चंचु
(स) उबटन, चसक, जूता (द) गोमल, सौत, सत्तू

व्याख्या-(अ) वचन, प्रिय, मध्य तत्सम शब्द हैं।

22. स्पर्श संघर्षी व्यंजन है-
(अ) ह् (ब) ख्
(स) स् (द) च्

व्याख्या-(द) च् स्पर्शसंघर्षी व्यंजन है।
व्यंजन वर्णों को उच्चारण यत्न के आधार पर निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है-
1. स्पर्श व्यंजन वर्ण 2. स्पर्श - संघर्षी व्यंजन वर्ण
3. संघर्षी व्यंजन वर्ण 4. उत्क्षिप्त व्यंजन वर्ण
5. पार्श्विक व्यंजन वर्ण 6. लुंठित व्यंजन वर्ण
1. स्पर्शी व्यंजन वर्ण :- स्पर्शी व्यंजन वर्णों की कुल संख्या पच्चीस होती है **'क' वर्ग, 'च' वर्ग, 'ट' वर्ग, 'त' वर्ग, 'प' वर्ग।**
2. स्पर्श - संघर्षी व्यंजन वर्ण :- 1. च, 2. छ, 3. ज, 4. झ

3. **उत्क्षिप्त व्यंजन वर्ण :**-1. ड़, 2.ढ़। इन व्यंजनों को **ताड़नजात व्यंजन** भी कहा जाता है।
4. **लुण्ठित व्यंजन वर्ण :**- ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण में जीभ पीछे की ओर उठती है, उन्हें लुण्ठित व्यंजन वर्ण कहते हैं। व्यंजन वर्ण में 'र' व्यंजन रखा गया है। **अन्य नाम :**- प्रकंपित व्यंजन।
5. **पार्श्विक व्यंजन वर्ण :**- ऐसे व्यंजन जिनके उच्चारण मे जीभ तलुए को छूती है और हवा जीभ के पार्श्व में से बाहर निकलती है, उन्हें पार्श्विक व्यंजन वर्ण कहते हैं। **'ल'** व्यंजन वर्ण को पार्श्विक व्यंजन वर्ण की श्रेणी में रखा गया है।

23. निम्नलिखित में से दंतोष्ठ्य वर्ण है-

(अ) ल (ब) फ
(स) उ (द) ऐ

व्याख्या-(ब) फ का उच्चारण दंत और ओष्ठ है, अत: फ दंतोष्ठ्य वर्ण है।

24. किस शब्द में दो उपसर्गों का प्रयोग हुआ है?

(अ) संहार (ब) अभ्यागत
(स) अनुकरण (द) संकल्प

व्याख्या-(ब) अभ्यागत में अभि और आ उपसर्ग का प्रयोग हुआ है।

25. 'बातचीत बंद करो और अपना काम देखो।' यह किस प्रकार का वाक्य है?

(अ) इच्छार्थक (ब) प्रश्नार्थक
(स) आज्ञार्थक (द) विधानार्थक

व्याख्या-(स) उक्त वाक्य आज्ञार्थक वाक्य है। अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं-(1) संकेतवाचक वाक्य (2) विधिवाचक वाक्य (3) प्रश्नवाचक वाक्य (4) इच्छावाचक वाक्य (5) आज्ञावाचक वाक्य (6) सन्देहवाचक वाक्य (7) विस्मयादिबोधक वाक्य और (8) निषेधवाचक वाक्य।

26. कौनसा वाक्य शुद्ध है?

(अ) उसने मुझे गालियाँ निकालीं।
(ब) उसने मेरे को गालियाँ निकाली।
(स) उसने मुझे गालियाँ दीं।
(द) उसने मुझे गालियाँ निकाल दीं।

व्याख्या-(स) 'उसने मुझे गालियाँ दीं' शुद्ध वाक्य है।

27. इनमें से सुमेलित विकल्प नहीं है-

(अ) गुड़ गोबर करना - बना काम बिगाड़ना
(ब) गुस्सा पीना - क्रोध रोकना
(स) गीत गाना - प्रशंसा करना
(द) गूलर का फूल होना - बहुत सुंदर होना

व्याख्या-(द) गूलर के पेड़ पर फूल होते ही नहीं है, अत: उक्त अर्थ असंगत है।

28. कौनसा वाक्य शुद्ध है?

(अ) यहाँ शत्रुओं से खतरे का डर है।
(ब) अश्वमेध का घोड़ा पकड़ा गया।
(स) यह असली गाय का घी है।
(द) उसके बाद फिर क्या हुआ?

व्याख्या-(ब) अश्वमेध का घोड़ा पकड़ा गया। शुद्ध वाक्य है। शेष वाक्यों के शुद्ध रूप-(1) यहाँ शत्रुओं से खतरा है।
(2) यह गाय का असली घी है।
(3) उसके बाद क्या हुआ?

29. 'कहना बहुत पर करना थोड़ा' के लिए निम्नांकित में से उपयुक्त लोकोक्ति है -

(अ) नानी के आगे ननिहाल की बातें।
(ब) नाम मेरा गाँव तेरा।
(स) नापे सौ गज, फाड़े नौ गज।
(द) नाचे कूदे बानरा माल मदारी खाये।

व्याख्या-(स) नापे सौ गज, फाड़े नौ गज लोकोक्ति का अर्थ है- कहना बहुत, पर करना थोड़ा।

30. किसी ने ठीक कहा है, 'नारी अबला नहीं, सबला है।' इस वाक्य में निम्नलिखित में से किस विराम चिह्न का प्रयोग नहीं हुआ है?

(अ) उद्धरण चिह्न (ब) अर्द्ध विराम
(स) पूर्ण विराम (द) अल्प विराम

व्याख्या-(ब) उक्त वाक्य में अर्द्ध विराम चिह्न का प्रयोग नहीं हुआ है।

31. 'जान बूझकर विपत्ति में पड़ना' के लिए उपयुक्त लोकोक्ति है-

(अ) ऊँट के गले में बिल्ली
(ब) इधर कुओं, उधर खाई
(स) आमों की कमाई, नींबुओं में गंवाई
(द) आ बैल, मुझे मार

व्याख्या-(द) आ बैल, मुझे मार लोकोक्ति का अर्थ है- जान बूझकर मुसीबत में पड़ना।

32. किस विकल्प के सभी शब्द अशुद्ध है?

(अ) भस्मिभूत, विभिषिका (ब) परिणती, भागीरथी
(स) सौहार्द्र, याज्ञवल्क्य (द) प्रज्ज्वलित, मैथिली

व्याख्या-(अ) भस्मिभूत, विभिषिका दोनों शब्द अशुद्ध है। इनका शुद्ध रूप इस प्रकार होगा- भस्मीभूत, विभीषिका।

33. चाँदी का पर्यायवाची शब्द नहीं है -

(अ) रौप्य (ब) चंद्रातप
(स) रूपा (द) रजत

व्याख्या-(ब) चंद्रातप चाँदी का पर्यायवाची शब्द नहीं है। चंद्रातप चंद्रमा का पर्यायवाची है।

34. 'यशोदा हमारे घर की लक्ष्मी है।' वाक्य में प्रयुक्त लक्ष्मी शब्द यहाँ संज्ञा के किस रूप को दर्शाता है?

(अ) व्यक्तिवाचक (ब) द्रव्यवाचक
(स) भाववाचक (द) जातिवाचक

व्याख्या-(द) उक्त वाक्य में लक्ष्मी शब्द जातिवाचक रूप को दर्शाता है।

35. विदेशी भाषा का शब्द है -

(अ) नमस्ते (ब) नवाचार
(स) नमक (द) नराधम

व्याख्या-(स) नमक फारसी भाषा का शब्द है।

36. भाववाच्य का उदाहरण है-
(अ) गणेश खाना नहीं खाएगा। (ब) सीता से चला भी नहीं जाता।
(स) शंकर चल नहीं पाएगा। (द) तुम खाना खा सकते हो।

व्याख्या-(ब) सीता से चला भी नहीं जाता, भाववाच्य का उदाहरण है। जब वाक्य में क्रिया न तो कर्त्ता के अनुसार आती है और न ही कर्म के अनुसार आती है, बल्कि **असमर्थता के भाव** के अनुसार आती है, तब भाववाच्य होता है। इस वाच्य में क्रिया सदैव अकर्मक, एकवचन, पुल्लिंग तथा अन्य पुरुष में होती है। वाक्य अक्सर नकारात्मक एवं असमर्थता का बोध कराने वाले होते हैं।

37. कई आश्रित वाक्यों के बीच में, जो एक मुख्य वाक्य पर अवलम्बित रहते हैं, विराम चिह्न प्रयुक्त होता है -
(अ) पूर्ण विराम (ब) अर्द्ध विराम
(स) अल्प विराम (द) अवतरण चिह्न

व्याख्या-(ब) कई आश्रित वाक्यों के बीच अर्द्ध विराम (;) प्रयुक्त होता है।

38. 'नौकर जा रहा था।' वाक्य में कौनसा काल है?
(अ) सामान्य भूतकाल (ब) अपूर्ण भूतकाल
(स) संदिग्ध भूतकाल (द) पूर्ण भूतकाल

व्याख्या-(ब) नौकर जा रहा था, वाक्य में अपूर्ण भूतकाल है। जब क्रिया के भूतकाल में लगातार होने का बोध हो, तब इसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। ऐसे वाक्यों के अंत में रहा था/रही थी/रहे थे आते हैं।

39. 'समानाधिकरण समुच्चयबोधक' के उपभेद और प्रयुक्त होने वाले पदों की दृष्टि से असंगत विकल्प है -
(अ) विरोधदर्शक - परंतु, लेकिन
(ब) परिणामदर्शक- अतएव, इसलिए
(स) संयोजक - और, एवं
(द) विभाजक- क्योंकि, जोकि

व्याख्या-(द) **समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय** के भी चार भेद है-
(1) संयोजक- अर, एवं, तथा आदि।
(2) विकल्पबोधक- कि, या, अथवा, तो, नहीं, तो, न आदि।
(3) विरोधदर्शक- परंतु, अगर, मगर, किंतु, लेकिन आदि।
(4) परिणामदर्शक- अतः, इसलिए, सो, अतएव आदि।

40. विशेषण-विशेष्य भाव से बना कर्मधारय समास है?
(अ) नीललोहित (ब) नराधम
(स) दीर्घायु (द) भवसागर

व्याख्या-(स) विशेषण-विशेष्य भाव से बना कर्मधारय समास दीर्घायु में है।

41. निम्नलिखित में से कौनसा वाक्य शुद्ध है?
(अ) पिताजी सकुशल पहुँच गए हैं।
(ब) बेटों में युद्ध हो गया।
(स) टिड्डियों की मंडली सारी फसल चट कर गई।
(द) मैं उसकी चातुर्यता से दंग रह गया।

व्याख्या-(अ) 'पिताजी सकुशल पहुँच गए हैं' शुद्ध वाक्य है। शेष अशुद्ध वाक्यों के शुद्ध रूप-
(1) सभी बेटे आपस में युद्ध करने लगे या बेटों में लड़ाई हो गई।
(2) टिड्डियों के दल ने सारी फसल चट कर दी।
(3) मैं उनकी चतुरता से दंग रह गया।

42. 'आँखों से पर्दा उठ जाना' मुहावरे का अर्थ है -
(अ) अप्रिय लगना।
(ब) अत्यधिक क्रोध करना।
(स) असलियत का पता लगना।
(द) अहंकार या मद से अंधा होना।

व्याख्या-(स) आँखों से पर्दा उठ जाना मुहावरे का अर्थ है- असलियत का पता लगना।

43. कौनसा विकल्प सुमेलित है?
(अ) घुटना टेकना - अड़ जाना
(ब) घास छीलना - पशुवत व्यवहार करना
(स) घी का कुप्पा लुढ़कना - बहुत लाभ होना
(द) घड़ों पानी पड़ जाना - अत्यंत लज्जित होना

व्याख्या-(द) घड़ों पानी पड़ जाना- अत्यंत लज्जित होना सही सुमेलित है। शेष मुहावरों का सही अर्थ-
(1) घुटने टेकना- हार मानना।
(2) घास छीलना- बेमतलब का काम करना।
(3) घी का कुप्पा लुढ़कना - अचानक नुकसान होना।

44. निम्नलिखित में से कौनसा विकल्प संयुक्त वाक्य का उदाहरण है?
(अ) वह पेड़ उग आया है जो तुमने लगाया था।
(ब) वह नहीं समझेगा क्योंकि वह मूर्ख है।
(स) दुर्ग से कुछ दूर बीस फुट ऊँचा स्तम्भ था।
(द) वह आया और उसने देखा कि भीतर कोई नहीं है।

व्याख्या-(द) वह आया और उसने देखा कि भीतर कोई नहीं है, संयुक्त वाक्य का उदाहण है। विकल्प (अ) और (ब) में मिश्र वाक्य है और विकल्प (स) में साधारण वाक्य है।

45. निम्न में से अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण का भेद नहीं है-
(अ) स्थानवाचक (ब) गुणवाचक
(स) रीतिवाचक (द) कालवाचक

व्याख्या-(ब) गुणवाचक विशेषण का भेद है। क्रिया विशेषण अव्यय के मुख्य रूप से चार भेद है-
(1) स्थानबोधक क्रिया विशेषण- ऐसे अव्यय, जो क्रिया का स्थान या दिशा बताते हैं। स्थानबोधक क्रिया विशेषण के भी दो भेद है-
(अ) स्थितिवाचक- ऊपर, नीचे, आगे, पीछे, यहाँ, वहाँ, बाहर, भीतर, आमने-सामने, सर्वत्र आदि।
(ब) दिशावाचक-इधर, उधर, उस तरफ, इस तरफ, किधर, जिधर, उस जगह, इस जगह आदि।
(2) कालबोधक क्रिया विशेषण- ऐसे अव्यय, जो क्रिया के काल का बोध कराते हैं, कालबोधक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। जैसे- आज, कल, परसों, कब, जब, तब, अब, बाद में, पहले, सुबह, शाम, दोपहर, रात आदि।
(3) परिमाणबोधक क्रिया विशेषण- ऐसे अव्यय, जो क्रिया की मात्रा का बोध कराते हैं तो परिमाणबोधक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे- थोड़ा, कम, ज्यादा, बहुत, अधिक, बराबर, अति, बिलकुल, बढ़ाकर, घटाकर, खूब, भरपूर आदि।
(4) रीतिबोधक क्रिया विशेषण- ऐसे अव्यय, जो क्रिया की रीति या ढंग का बोध कराते हैं, रीतिबोधक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। उपर्युक्त ध्यानपूर्वक शब्द रीतिबोधक क्रिया विशेषण है।